परीक्षा–गुरु प्रकरण–१०

प्रबन्ध (इन्तज़ाम)

परीक्षा-गुरु प्रकरण-१०

प्रबन्ध (इन्तज़ाम)

कारजको अनुबंध लख अरु , उत्तरफल चाहि

पुन अपनी सामर्थ्य लख करै कि न करे ताहि

बिदुरप्रजागरे.

सवेरे ही लाला मदनमोहन हवा खोरी के लिये कपड़े पहन रहे थे. मुन्शी चुन्नीलाल और मास्टर शिंभूदयाल आ चुके थे.

"आजकल मैं हमको एक बार हाकिमों के पास जाना है" लाला मदनमोहन नें कहा.

"ठीक है, आपको म्यूनिसिपेलीटी के मेम्बर बनानें की रिपोर्ट हुई थी. उस्की मंजूरी भी आ गई होगी" मुन्शी चुन्नीलाल बोले.

"मंजूरी मैं क्या संदेह है ? ऐसे लायक आदमी सरकार को कहां मिलेंगे ?" मास्टर शिंभूदयाल नें कहा.

"अभी तो (खुशामदमैं) बहुत कसर है ! साइराक्यूस के सभासद डायोनिस्यसका थूक चाट जाते थे और अमृतसै अधिक मीठा बताते थे" लाला ब्रजकिशोर नें कमरे मैं आते, आते कहा.

"यों हर काम मैं दोष निकालनें की तो जुदी बात है पर आप ही बताइए इस्मैं मैंनें झूठ क्या कहा ?" मास्टर शिंभूदयाल पूछनें लगे.

"लाला साहब नें म्यूनिसिपेलीटी का सालानः आमद खर्च अच्छी तरह समझ लिया होगा ? आमदनी बढ़ानें के रस्ते अच्छी तरह बिचार लिये होंगे ? शहर की सफाई के लिये अच्छे, अच्छे उपाय सोच लिये होंगे ?" लाला ब्रजकिशोर नें पूछा.

"नहीं, इन बातों मैं सै अभी तो किसी बात पर दृष्टि नहीं पहुँचाई गई परन्तु इन बातों का क्या है ? ये सब बातें तो काम करते, करते अपनें आप मालूम हो जायेंगी" लाला मदनमोहन नें जवाब दिया.

"अच्छा आप अपनें घर का काम तो इतनें दिनसै करते हो उस्के नफे नुक्सान और राह बाट सै तो आप अच्छी तरह वाकिफ हो गए होंगे ?" लाला ब्रजकिशोर नें पूछा.

इस्समय लाला मदनमोहन नावाकिफ नहीं बनाना चाहते थे. परन्तु वाकिफकार भी नहीं बन सकते थे इसलिये कुछ जवाब न देसके.

"अब आप घर की तरह वहां भी औरों के भरोसे रहे तो काम कैसे चलेगा ? और अब बातों सै वाकिफ होनें का बिचार किया तो वाकिफ होंगे जितनें आपके बदले काम कौन करैगा ?" लाला ब्रजकिशोर नें पूछा.

"अच्छा मंजूरी आवैगी जितनें मैं इन् बातों सै कुछ, कुछ वाकिफ हो लूंगा." लाला मदनमोहन नें कहा.

"क्या इन बातों सै पहले आपको अपनें घर के कामों सै वाकिफ़ होनें की ज़रूरत नहीं है ? जब आप अपनें घर का प्रबन्ध उचित रीति सै कर लेंगे तो प्रबन्ध करनें की रीति आ जायेगी और हरेक काम का प्रबन्ध अच्छी तरह कर सकेंगे, परन्तु जब तक प्रबन्ध करनें की रीति न आवेगी कोई काम अच्छी तरह न हो सकेगा ?" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे. "हाकमों की प्रसन्नता पर आधार रख; अपनें मुख सै अधिकार मांगनें मैं क्या शोभा है ? और अधिकार लिये पीछै वह काम अच्छी तरह पूरा न हो सकै तो कैसी हँसी की बात है ? और अनुभव हुए बिना कोई काम किस तरह भली भांति हो सक्ता है ? महाभारत मैं कौरवों के गौ घेरनें पर बिराट का राजकुमार उत्तर बड़े अभिमान सै उन्को जीतनें की बातैं बनाता था, परन्तु कौरवों की सेना देखते ही रथ छोड़कर उघाड़े पांव भाग

निकला ! इसी तरह सादी अपनें अनुभव सै लिखते हैं कि "एकबार मैं बलख सै शामवालों के साथ सफ़र को चला मार्ग भयंकर था. इसलिये एक बलवान पुरुष को साथ ले लिया, वह शस्त्रों सै सजा रहता था और उस्की प्रत्यंचा को दस आदमी भी नहीं चढ़ा सकते थे वह बड़े, बड़े बृक्षों को हाथ सै उखाड़डाल्ता परन्तु उस्नें क़भी शत्रु सै युद्ध नहीं किया था एक दिन मैं और वो आपस मैं बातैं करते चले जाते थे. उस्समय दो साधारण मनुष्य एक टीले के पीछै सै निकल आए और हम को लूटनें लगे उस्मैं एक के पास लाठी थी और दूसरे के हाथ मैं एक पत्थर था. परन्तु उन्को देखते ही उस बलवान पुरुष के हाथ पांव फूल गए ! तीर कमान छूट पड़ी ! अन्त मैं

https://www.hindiadda.com/pareeksha-guru-part-x-prabandh/

हमको अपनें सब बस्त्र शस्त्र देकर उन्सै पीछा छुड़ाना पड़ा, बहुधा अब भी देखनें मैं आता है कि अच्छे प्रबन्ध बिना घर मैं माल होनें पर किसी, साहूकार का दिवाला निकल जाता है रुपे का माल दो, दो आनें को बिकता फ़िरता है"

"परन्तु काम किये बिना अनुभव कैसे हो सक्ता है ?" मुन्शी चुन्नीलाल नें पूछा.

"सावधान मनुष्य काम करनें सै पहले औरों की दशा देखकर हरेक बात का अनुभव अच्छी तरह कर सक्ता है और अनायास कोई नया काम भी उस्को करना पड़े तो साधारण भाव सै प्रबन्ध करनें की रीति जानकर और और बातों के अनुभव का लाभ लेनें सै काम करते, करते वह मनुष्य उस बिषय मैं अपना अनुभव अच्छी तरह बढ़ा सक्ता है. सो मैं प्रथम कह चुका हूँ कि लाला साहब प्रबन्ध की रीति जान जायंगे तो हरेक काम का प्रबन्ध अच्छी तरह कर सकैंगे" लाला ब्रजकिशोर नें जवाब दिया.

"आप के निकट प्रबन्ध करनें की रीति क्या है ?" लाला मदनमोहन नें पूछा.

"हरेक काम के प्रबन्ध करनें की रीति जुदी, जुदी हैं परन्तु मैं साधारण रीति सै सब का तत्व आप को सुनाता हूँ" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे. "सावधानी की सहायता लेकर हरेक बात का परिणाम पहले सै सोच लेना, और उन सब पर एक बार दृष्टि कर के जितना अवकाश हो उतनें ही मैं सब बातों का ब्योंत बना लेना निरर्थक चीजों को काम मैं लानें की युक्ति सोचते रहना और जो, जो बातें आगै होनें वाली मालूम हों उन्का प्रबन्ध पहलै ही सै दूर दृष्टि पहुँचा कर धीरे, धीरे इस भांत करते जाना कि समय पर सब काम तैयार मिलें, किसी बात का समय न चूकनें पावै, कोई काम उलट पुलट न होनें पावै, अपनें आस पास बालों की उन्नति से आप पीछे न रहें, किसी नोकर का अधिकार स्वतन्त्रता की हद सै आगे न बढ़नें पावै, किसी पर जुल्म न होनें पावै, किसी हक़ मैं अन्तर न आनें पावैं, सब बातों की सम्हाल उचित समय पर होती रहे, परन्तु ये सब काम इन्की बारीकियों पर दृष्टि रखनै सै कोई नहीं कर

सक्ता बल्कि इस रीति सै बहुत महनत करनें पर भी छोटे, छोटे कामौं मैं इतना समय जाता रहता है कि उस्के बदले बहुत सै जरूरी काम अधूरे रह जाते हैं और तत्काल प्रबन्ध बिगड़ जाता है इसलिये बुद्धिमान मनुष्य को चाहिये कि काम बांट कर उन्पर योग्य आदमी मुकर्रर कर दे और उन्की काररवाईपर आप दृष्टि रक्खे पहले अन्दाज सै पिछ्ला परिणाम मिलाकर भूल सुधारता जाय एक साथ बहुत काम न छेड़े, काम करनें के समय बटे रहैं, आमद सै थोड़ा ख़र्च हो और कुपात्र को कुछ न दिया जाय। महाराज रामचन्द्रजी भरत सै पूछते हैं "आमद पूरी होत है ? खर्च अल्पदरसाय ।। देत न-कबहुँ कुपात्रकों कहहुँ भरत समुजाय।।"

इसी तरह इन्तज़ाम के कामौं मैं क-रिआयत सै बिगाड़ होता है, हज़रत सादी कहते हैं "जिस्सै तैनें दोस्ती की उस्सै नोंकरीकी आशा न रख"।

"लाला ब्रजकिशोर साहब आजकल की उन्नति के साथी हैं तथापि पुरानी चालके अनुसार रोचक और भयानक बातोंको अपनी कहन मैं इस तरह मिला देते हैं कि किसीको बिल्कुल खबर नहीं होनें पाती" मास्टर शिंभूदयाल नें कहा.

"नहीं मैं जो कुछ कहता हूँ अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार यथार्थ कहता हूँ" लाला ब्रजकिशोर कहनें लगे "चीनके शहनशाह होएन नें एकबार अपनें मंत्री टिचीसै पूछा कि "राज्य के वास्ते सब सै अधिक भयंकर पदार्थ क्या है ?" मंत्रीनें कहा "मूर्तिके भीतरका मूसा" शहनशाहनें कहा "समझाकर कह" मंत्री बोला "अपनें यहां काठकी पोली मूर्ति बनाई जाती है और ऊपर सै रंग दी जाती है अब दैवयोग सै कोई मूसा उस्के भीतर चला गया तो मूर्ति खंडित होनें के भयसै उस्का कुछ नहीं कर सक्ते. इसी तरह हरेक राज्य मैं बहुधा ऐसे मनुष्य होते हैं जो किसी तरह की योग्यता और गुण बिना केवल राजा की कृपा के सहारे सै सब कामों मैं दखल देकर सत्यानास किया करते हैं परन्तु राजा के डर सै लोग उन्का कुछ नहीं कर सक्ते" हां जो राजा आप प्रबन्ध करनेंकी रीति जान्ते हैं वह उनलोगों के चक्कर सै खूबसूरती के साथ

https://www.hindiadda.com/pareeksha-guru-part-x-prabandh/

बचे रहते हैं जैसे ईरान का बादशाह आरटाजरकसीस सै एक बार उस्के किसी कृपापात्रनें किसी अनुचित काम करनें के लिये सवाल किया. बादशाह नें पूछा कि "तुमको इस्सै क्या लाभ होगा **?"** कृपा पात्रनें बता दिया तब बादशाहनें उतनी रकम उस्को अपनें ख़जानें सै दिवा दी और कहा कि "ये रुपे ले इनके देनें सै मेरा कुछ नहीं घटता परन्तु तैनें जो अनुचित सवाल किया था उस्के पूरा करनें सै मैं निस्सन्देह बहुत कुछ खो बैठता" उचित प्रबन्ध मैं जरासा अन्तर आनेंसै कैसा भयंकर परिणाम होता है इस्पर बिचार करिये कि इसी दिल्ली तख्त बाबत दाराशिकोह और औरंगजेब के बीच युद्ध हुआ. उस्समय औरंगजेब की पराजय मैं कुछ संदेह न था परन्तु दाराशिकोह हाथीसै उतरतेही मानों तख्त सै उतर गया मालिक का हाथी खाली देखते सब सेना तत्काल भाग निकली."

"महाराज ! बग्गी तैयार है." नोकरनें आकर रिपोर्ट की.

"अच्छा चलिये रस्ते मैं बतलाते चलेंगे" लाला ब्रजकिशोर नें कहा. निदान सब लोग बग्गी मैं बैठकर रवानें हुए.

https://www.hindiadda.com/pareeksha-guru-part-x-prabandh/

परीक्षा-गुरु – Pariksha Guru

परीक्षा गुरू हिन्दी का प्रथम उपन्यास था जिसकी रचना भारतेन्दु युग के प्रसिद्ध नाटककार लाला श्रीनिवास दास ने 25 नवम्बर,1882 को की थी।

परीक्षा गुरु पहला आधुनिक हिंदी उपन्यास था। इसने संपन्न परिवारों के युवकों को बुरी संगति के खतरनाक प्रभाव और इसके परिणामस्वरूप ढीली नैतिकता के प्रति आगाह किया। परीक्षा गुरु नए उभरते मध्यम वर्ग की आंतरिक और बाहरी दुनिया को दर्शाता है। पात्र अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखते हुए औपनिवेशिक समाज के अनुकूल होने की कठिनाई में फंस जाते हैं। हालांकि यह जाहिर तौर पर विशुद्ध रूप से 'पढ़ने के आनंद' के लिए लिखा गया था। औपनिवेशिक आधुनिकता की दुनिया भयावह और अप्रतिरोध्य दोनों लगती है।

उपन्यास पाठक को जीने का 'सही तरीका' सिखाने की कोशिश करता है और सभी समझदार पुरुषों से सांसारिक बुद्धिमान और व्यावहारिक होने, अपनी परंपरा और संस्कृति के मूल्यों में निहित रहने और सम्मान और सम्मान के साथ जीने की उम्मीद करता है। पात्र अपने कार्यों के माध्यम से दो अलग-अलग दुनियाओं को जोड़ने का प्रयास करते हैं; वे नई कृषि प्रौद्योगिकी को अपनाते हैं, व्यापारिक प्रथाओं का आधुनिकीकरण करते हैं, भारतीय भाषाओं के उपयोग को बदलते हैं जिससे वे पश्चिमी विज्ञान और भारतीय ज्ञान दोनों को अपनाने में सक्षम हो जाते हैं। युवाओं से समाचार पत्र पढ़ने की स्वस्थ आदत विकसित करने का आग्रह किया जाता है। यह सब पारंपरिक मूल्यों का त्याग किए बिना हासिल किया जाना चाहिए।

इस उपन्यास उपन्यास 41 छोटे-छोटे प्रकरणों में विभक्त है। कथा तेजी से आगे बढ़ती है और अंत तक रोचकता बनी रहती है। पूरा उपन्यास नीतिपरक और उपदेशात्मक है। उसमें जगह-जगह इंग्लैंड और यूनान के इतिहास से दृष्टांत दिए गए हैं। ये दृष्टांत मुख्यतः ब्रजकिशोर के कथनों में आते हैं। इनसे उपन्यास के ये स्थल आजकल के पाठकों को

https://www.hindiadda.com/pareeksha-guru-part-x-prabandh/

बोझिल लगते हैं। उपन्यास में बीच-बीच में संस्कृत, हिंदी, फारसी के ग्रंथों के ढेर सारे उद्धरण भी ब्रज भाषा मेंकाव्यानुवाद के रूप में दिए गए हैं। हर प्रकरण के प्रारंभ में भी ऐसा एक उद्धरण है। उन दिनों काव्य और गद्य की भाषा अलग-अलग थी। काव्य के लिए ब्रज भाषा का प्रयोग होता था और गद्य के लिए खड़ी बोली का। लेखक ने इसी परिपाटी का अनुसरण करते हुए उपन्यास के काव्यांशों के लिए ब्रज भाषा चुना है।

परीक्षा-गुरु - Pariksha Guru in Hindi

1. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१ सौदागरकी दुकान
2. परीक्षा-गुरु प्रकरण- २ अकालमैं अधिकमास
3. परीक्षा-गुरु प्रकरण- ३ संगतिका फल
4. परीक्षा-गुरु प्रकरण-४ मित्रमिलाप
5. परीक्षा-गुरु प्रकरण-५ विषयासक्त
6. परीक्षा-गुरु प्रकरण-६ भले बुरे की पहचान
7. परीक्षा-गुरु प्रकरण – ७ सावधानी (होशयारी)
8. परीक्षा-गुरु प्रकरण-८ सबमैं हां
9. परीक्षा-गुरु प्रकरण-९ सभासद
10. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१० प्रबन्ध (इन्तज़ाम)
11. परीक्षा-गुरु प्रकरण-११ सज्जनता
12. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१२ सुख दु:ख
13. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१३ बिगाड़का मूल- बिवाद
14. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१४ पत्रव्यवहा
15. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१५ प्रिय अथवा पिय् ?
16.
17. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१६ सुरा (शराब)
18. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१७ स्वतन्त्रता और स्वेच्छाचार.
19. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१८ क्षमा
20. परीक्षा-गुरु प्रकरण-१९ स्वतन्त्रता
21. परीक्षा-गुरु प्रकरण – २० कृतज्ञता
22. परीक्षा-गुरु प्रकरण-२१ पति ब्रता
23. परीक्षा-गुरु प्रकरण-२२ संशय
24. परीक्षा-गुरु प्रकरण-२३ प्रामाणिकता
25. परीक्षा-गुरु प्रकरण -२४ (हाथसै पै दा करनें वाले) (और पोतड़ों के अमीर)
26. परीक्षा-गुरु प्रकरण -२५ साहसी पुरुष

https://www.hindiadda.com/pareeksha-guru-part-x-prabandh/

27. परीक्षा-गुरु प्रकरण -२६ दिवाला
28. परीक्षा-गुरु प्रकरण -२७ लोक चर्चा (अफ़वाह).
29. परीक्षा-गुरु प्रकरण -२८ फूट का काला मुंह
30. परीक्षा-गुरु प्रकरण -२९ बात चीत.
31. परीक्षा-गुरु प्रकरण -३० नै राश्य (नाउम्मेदी).
32. परीक्षा-गुरु प्रकरण -३१ चालाक की चूक
33. परीक्षा-गुरु प्रकरण -३२ अदालत
34. परीक्षा-गुरु प्रकरण -३३ मित्रपरीक्षा
35. परीक्षा-गुरु प्रकरण-३४ हीनप्रभा (बदरोबी)
36. परीक्षा-गुरु प्रकरण-३५ स्तुति निन्दा का भेद
37. परीक्षा-गुरु प्रकरण-३६ धोके की टट्टी
38. परीक्षा-गुरु प्रकरण-३७ बिपत्तमैं धैर्य
39. परीक्षा-गुरु प्रकरण-३८ सच्ची प्रीति
40. परीक्षा-गुरु प्रकरण -३९ प्रेत भय
41. परीक्षा-गुरु प्रकरण ४० सुधारनें की रीति
42. परीक्षा-गुरु प्रकरण ४१ सुखकी परमावधि

https://www.hindiadda.com/pareeksha-guru-part-x-prabandh/